The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities
Year-8 Volume: I, Jan-March, 2026 Impact Factor 5.625 (IIFS)
Issue-29 ISSN: 2582-1296 (Online)
Website: www.theasianthinker.com **Email**: asianthinkerjournal@gmail.com

14. भारतीय स्त्री चेतना के संदर्भ में ‘कल्याण’ पत्रिका के नारी अंक का अध्ययन

राकेश कुमार
शोध छात्र
स्नातकोत्तर हिन्दी विभाग, बी.आर.ए. बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर, बिहार

शोध-सार

'कल्याण' पत्रिका के नारी अंक (विशेषांक) ने भारतीय स्त्री चेतना के जागरण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इस अंक में वेदों, उपनिषदों, पुराणों और अन्य धर्मग्रंथों के मंत्रों एवं श्लोकों के माध्यम से अनेक लेख प्रकाशित किए गए। इन लेखों में निहित विचारों के चिंतन और मनन से स्त्री की सांस्कृतिक, धार्मिक और सामाजिक चेतना के विकास को बल मिला। इस विशेषांक में प्रकाशित 'नारी और धर्म', 'नारी तीर्थ', 'नारी जगत', 'नारी महत्ता' जैसे प्रमुख लेखों ने न केवल स्त्री चेतना को गहराई से समझने में सहायता की, बल्कि उसके विकास में भी उल्लेखनीय योगदान दिया। इन लेखों के माध्यम से स्त्री के आत्मसम्मान, उसके अस्तित्व, उसके कर्तव्य (नारी धर्म) और उसकी वेदना को रेखांकित करने का प्रयास किया गया।

बीज शब्द: स्त्री चेतना, सांस्कृतिक चेतना, नारी धर्म, आत्मसम्मान, अस्तित्व, स्त्री की वेदना

भूमिका

भारतीय स्त्री चेतना के निर्माण में सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक और साहित्यिक आंदोलनों का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। भारत में स्त्री चेतना के उदय का प्रारंभ प्रायः 19वीं शताब्दी के आरंभ से माना जाता है। इस दौरान समाज में व्याप्त सती प्रथा, दास प्रथा, पर्दा प्रथा, बाल-विवाह, वेश्यावृत्ति और कन्या शिशु हत्या जैसी अनेक सामाजिक बुराइयों के विरुद्ध पुरुष समाजसुधारकों ने जन-जागरूकता के व्यापक अभियान चलाए। इन समाजसुधारकों में ज्योतिबा फुले, सावित्रीबाई फुले, राजा राममोहन राय, महर्षि दयानंद सरस्वती और स्वामी विवेकानंद जैसे विचारकों ने स्त्री की खोई हुई अस्मिता को पुनः प्रतिष्ठित करने का कार्य किया। उनके द्वारा संचालित जन-जागरूकता के इन आंदोलनों ने स्त्री की सुप्त चेतना को जाग्रत करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

शोध का उद्देश्य

इस शोध का मुख्य उद्देश्य 'कल्याण' पत्रिका के नारी अंक में प्रकाशित सामग्री के विश्लेषण के माध्यम से भारतीय स्त्री चेतना के स्वरूप को समझना है।

शोध पद्धति

प्रस्तुत शोध मुख्यतः सांस्कृतिक एवं वैचारिक विश्लेषण पर आधारित है। इसके लिए निम्नलिखित स्रोतों का अध्ययन किया जाएगा:

'कल्याण' पत्रिका के नारी अंक की विस्तृत समीक्षा।

नारी-विमर्श की भारतीय परंपरा का अध्ययन।

नारी और क्रांति विषयक साहित्य का अवलोकन।

सिमोन द बोउआर के 'द सेकेंड सेक्स' में प्रतिपादित 'स्त्री की अन्यता' (Otherness) की अवधारणा का अध्ययन।

'श्रृंखला की कड़ियाँ', 'भारत माता', 'धरती माता' एवं महात्मा गांधी के दर्शन जैसे साहित्य का विश्लेषण।

विवेचना

भारतीय समाज में नारी का स्थान सदैव विशिष्ट एवं बहुआयामी रहा है। समाज के निर्माण में उनकी भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण रही है। उनके सहयोग से ही अनेक बार सभ्यताओं का निर्माण, विकास और पतन हुआ है। नारी सभ्यता के इस उत्थान-पतन की साझेदार रही है। वह परिवार की आधारशिला तो है ही, साथ ही सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक एवं मानवीय मूल्यों की संवाहिका भी रही है। 'चेतना' शब्द का अर्थ है – जागरूकता, बोध, होश, सजगता या सचेत होना। यह 'चेत' धातु में 'ना' प्रत्यय जोड़ने से बना है।

स्त्री चेतना का आशय है – स्त्री के विविध पक्षों को लेकर चिंतन करना, स्त्री में निहित शक्ति की पहचान करना तथा उन्हें उनके अधिकारों और कर्तव्यों के प्रति जागरूक बनाना।

भारतीय स्त्री चेतना : प्राचीन काल में भारतीय नारी को परिवार और समाज में अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त था। वे जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में पुरुष के लगभग बराबर ही अधिकार एवं सम्मान प्राप्त था। पुत्री के रूप वह पुत्र के समान प्रिय सुवति के रूप में युवक के समान, स्वतंत्र, पत्नी के रूप में पति के समान ही अधिकार माता के रूप में पिता से अधिक पूज्य समझी जाती थी।

वैदिक काल में भारतीय नारी को सम्मान जनक जीवन जीने का अधिकार प्राप्त था। वह न केवल परिवार की आधारशिला मानी जानी थी बल्कि वे सामाजिक, सांस्कृतिक धार्मिक एवं मानवीय मूल्यों की संवाहिका भी रही है। वैदिक समाज में सबसे अधिक सम्मानित पद उन ऋषियों का था जिन्हें मंत्र द्रष्टा अथवा मंत्र रचयिता कहा जाता था। वे घर क काम-काजों के अलावा, यज्ञ, युद्ध कलाओं एवं अन्य धार्मिक अनुष्ठानों में सक्रिय रूप से भाग लेती थी। पत्नी के बिना पति कोई भी

The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities
Year-8 Volume: I, Jan-March, 2026 Impact Factor 5.625 (IIFS)
Issue-29 ISSN: 2582-1296 (Online)
Website: www.theasianthinker.com **Email**: asianthinkerjournal@gmail.com

धार्मिक कार्य नहीं कर सकते थे। यज्ञों में पति के साथ पत्नी का होना अनिवार्य समझा जाता था। समय के प्रवाह ने नारी की भूमिका उनके पहचान उनकी स्थिति में बहुत बड़ा परिवर्तन हुआ। धीरे-धीरे उनके सारे हक अधिकार छीन लिये गये और वे चार दिवारों में कैद कर दी गई। एक समय ऐसा भी आया जब पुरुष समाज सुधारकों द्वारा नारी की स्थिति पर गहरी चिंता व्यक्त की गई एवं उनके उत्थान को लेकर कई सामाजिक जागरूकता आंदोलन चलाया जाने लगा। आधुनिक भारत में एक ओर जहां वे शिक्षा रोजगार, समानता के लिए संघर्ष कर रही है वही दूसरी तरफ परंपरा परिवार और समाज के प्रति प्रतिबद्धता से जूझ रही है।

स्त्री की वेदना को समझते हुए महादेवी वर्मा लिखती हैं ‘‘आज हिन्दू स्त्री भी शव के समान निष्पन्द है। संस्कारों ने उसे पक्षाघात के रोगी के समान जड़ कर दिया है अतः अपने सुख, दुःख को चेष्टा द्वारा प्रकट करने में भी असमर्थ है।’’

भारतीय स्त्री चेतना का वैशिष्ट्यः- भारतीय स्त्री चेतना, भारतीय समाज, संस्कृति और साहित्य की एक ऐसी जीवंत अवधारणा है जो स्त्री के आत्म-सम्मान, अस्तित्व, समानता और अधिकार के बोध से जुड़ी है। जिनमें महिला सशक्तिकरण, उनके सामाजिक और आर्थिक स्वतंत्रता, पारंपरिक मूल्यों के साथ प्रगतिशील सोच भी शामिल है जिसके द्वारा आत्म जागरूकता, सामाजिक चेतना, सांस्कृतिक चेतना, साहित्यिक चेतना एवं आध्यात्मिक चेतना को जागृत करने का काम करती है। स्त्री के आत्म-सम्मान उनके अधिकारों उनके अस्तित्व और समान्ता के संबंध में महात्मा गांधी का मानना है कि ‘‘स्त्री प्रकृति से ही परिवार की माता के रूप में बच्चों का लालन पालन करके गृहस्थ धर्म का पालन करती है। ऐसे में पुरुष समाज को चाहिए कि वह जीवन संगनी के रूप में स्त्री का सम्मान करे एवं उन्हें प्रतिष्ठा एवं मर्यादा के साथ अपने पुरुष धर्म का पालन करे।’’ स्त्री को बाहरी स्वतंत्रता के संबंध में राम मनोहर लोहिया का मानना है ‘‘असलियत यह है कि हिन्दुस्तान की नारी घर में देवी और बाहर नगण्य समझी जाती है।’’ भारतीय स्त्री के कारण आज स्त्री घर में एवं बाहर स्वतंत्र होकर अपने, आत्म जागरूकता को समझते हुए अपने व्यक्तिगत स्वतंत्रता के रूप मं अपनी अलग पहचान बना रही है। दो समाज में व्याप्त कुरीतियों, कुप्रथाओं, असमानताओं के विरूद्ध आवाज बुलंद करते हुए स्त्री को नये अर्थों में पुनः स्थापित कर रही है।

कल्याण के नारी अंक की समीक्षाः भारतीय समाज में स्त्री चेतना केवल सामाजिक, साहित्य एवं राजनीतिक आंदोलनों का परिणाम नहीं है बल्कि यह धार्मिक एवं सांस्कृतिक आंदोलनों का भी परिणाम रहा है। भक्तिकाल में चलाये गये आंदोलनों का भी स्त्री चेतना पर प्रभाव रहा है। गीता प्रेस गोरखपुर द्वारा प्रकाशित ‘कल्याण’ पत्रिका जो भारतीय समाज के धार्मिक एवं सांस्कृतिक आंदोलन को जन आंदोलन में परिवर्तित करने का काम किया। ‘कल्याण’ पत्रिका के नारी अंक नारी विषयक विभिन्न समस्याओं पर विस्तारपूर्वक चर्चा और उनका भारतीय आदर्शोलित समाधान प्रस्तुत करते हुए मार्गदर्शन करती है। नारी अंक विशेषांक ने भारतीय नारी की सांस्कृतिक चेतना, धार्मिक चेतना एवं सामाजिक चेतना को जगाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

सांस्कृतिक चेतना: 'कल्याण' पत्रिका के नारी अंक के द्वारा भारतीय स्त्री चेतना को जगाने के लिए वेद, उपनिषदों, पुराण एवं धर्मग्रन्थों में वर्णित वेद मंत्रों, श्लोकों के माध्यम से कई महत्वपूर्ण लेख प्रकाशित किये। उन प्रकाशित लेखों के चिंतन-मनन से स्त्री के सांस्कृतिक चेतना का विकास हुआ। विशेषांक में प्रकाशित प्रमुख लेख जिनमें नारी धर्म, नारी तीर्थ, नारी जगत, नारी महत्ता जैसे लेख ने स्त्री चेतना को समझने में महत्वपूर्ण योग्यदान दिया। भारतीय संस्कृति की अपनी एक अलग पहचान रही है, जिसका निर्माण अध्यात्म की मजबूत आधारशिला पर हुई है। जिसे हम मलिन, मोहग्रस्त, संकीर्ण, बुद्धि के आधार पर कभी नहीं देख सकते। उसे देखने, समझने एवं परखने के लिए, भागवत नाम-जप-तप ध्यान एवं कठिन साधना की जरूरत पड़ती है। भारतीय संस्कृति में स्त्री को 'मां' बहन बेटी, पत्नी के रूप में देखा जाता है। समय-समय पर उनकी स्तुती की जाती है। आज भी 'कन्या पूजन', 'भैया दूज' जैसे त्योहार के रूप में मनाते है। वही माता के रूप में, माता लक्ष्मी, माता सरस्वती, माता दुर्गा, माता काली के रूप में सदियों से चली आ रही परंपरा के रूप में पूजते है।

मनु स्मृति के तीसरे अध्याय श्लोक 56 में कहा गया है।

''यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः।
यत्रैतास्तु न पूज्यन्ते स्र्वास्तित्राफला क्रिया।।''

भारतीय संस्कृति में ऐसी भावना नहीं है, जहां स्त्रियों की पूजा होती है, उनको सम्मान मिलता है वहां समस्त देवता निवास करते हैं। जहां उनकी पूजा नहीं होती, उनका आदर-भाव नहीं मिलता वहां समस्त क्रियाएँ व्यर्थ हो जाती है। मानवत के इतिहास की स्त्री प्रधान नायिका रही है इसको लेकर कई राष्ट्र का उदय एवं अंत हुआ, इसके साथ मानवता हंसी और रोयी है। सभ्यता और संस्कृति उसी के सहारे विकसित हुई, उसी के कारण ध्वस्त हुई। स्त्री ने प्रेम की शक्ति से हिंसक प्रवृत्ति वाले मनुष्य को पराजित करके जानवर से इंसान बनाया, उसमें ममत्व का विस्तार करके उसे श्रेष्ठता एवं संस्कार पैदा किया। अस्त्र उठाने वाले वीर पुरूष को प्रेम के बंधन में बांध कर घर परिवार में रहना सिखाया। स्त्री ने वीर पुरूष को समाज की मर्यादा का पाठ पढ़ा कर श्रेष्ठ संस्कृति की शिक्षा दी।

भारतीय संस्कृति में नारी धर्म के बारे में बताया गया कि हिन्दू नारी घर की रानी होती है, गृहस्थ कार्यो के अलावा, सुयोग्य संतान उत्पन्न करके वंश की रक्षा एव वृद्धि करना परम धर्म समझा जाता है। पति धर्म के कार्यो में हाथ बांटना तथा स्वयं धर्म का पालन करते हुए, अपने पति का उद्धार करना तथा पति को परमात्मा का स्वरूप समझ कर उनकी सेवा करते हुए परम धाम को प्राप्त करना स्त्री का परम कर्तव्य समझा गया।

सती अनसूया ऐसे ही पति परायण स्त्री थी जिसने पति को परमेश्वर का स्वरूप समाज समझ उनकी सेवा की, उनके पति परायण, सत्य धर्मशील सदाचार, विनय लज्जा, क्षमा सहिष्णुता एवं तपस्या की तपोमूर्ति जिसने अपने पतिव्रता के तप के कारण त्रिदेव को बाल स्वरूप बना कर स्तन पान कराया था।

The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities
Year-8 Volume: I, Jan-March, 2026 Impact Factor 5.625 (IIFS)
Issue-29 ISSN: 2582-1296 (Online)
Website: www.theasianthinker.com **Email**: asianthinkerjournal@gmail.com

''विधि हरि-हर भिक्षुक बने अनसूया आश्रम गये।
पतिव्रता की परीक्षा हित भिक्षा मांगत गये।।''

ऐसी पति परायण स्त्री भारतीय संस्कृति के अलावा और कही नहीं मिलती जिसने पतिव्रत के तप बल से त्रिदेव को बालक बना दुग्ध पान कराया हो।

भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति के संबंध में 'द बाइबल इन इंडिया'में कहा गया। यहां एक ऐसी सभ्यता के दर्शन होते हैं जिसको आप अपनी सभ्यता के पहले के स्वीकार करने में 'न' नहीं कर सकते। जो नारी को पुरूष के समकक्ष धरातल पर रखती है और जो उस घर में एवं समाज में स्थान प्रदान करती है।''

धार्मिक चेतना: भारत में जिस समय स्वतंत्रता आंदोलन जोर-शोर से चल रहा था। उस समय प्रत्येक भारतीय ने स्वतंत्र भारत का सपना देखा जिसे प्राप्त करने के लिए भारत के हर नागरिक कृत्य संकल्पित था। लोग खुशी-खुशी भारत की स्वतंत्रता के लिए फांसी के फंदे पर झुल जाया करते थे। उस समय भारतीय संस्कृति को प्रभावित करने के लिए अंग्रेजों द्वारा ईसाईत का प्रचार-प्रसार जोड़ों से चल रहा था। इसका प्रभाव प्रत्यक्ष रूप से भारतीय संस्कृति पर दिखाई दे रहा था। ऐसे समय में 'कल्याण' पत्रिका ने भारत से लुप्त हो रही भारतीयता एवं भारतीय संस्कृति को बचाने के उद्देश्य से कई महत्वपूर्ण लेखों को प्रकाशित कर धार्मिक चेतना फैलाने का काम किया। कल्याण पत्रिका के माध्यम से भारतीय स्त्री के धार्मिक चेतना को जगाने का काम किया। कल्याण पत्रिका के विशेषांक नारी अंक में एक तरफ जहां धार्मिक उपदेश, कथा, संग्रहित किये गये, वही सती-सावित्री, सती सतरूपा, सती अरूधती, ब्रह्मवादनी घोषा, वाकृ, गार्गी, मैत्रेय, मदालसा, दमयन्ती जैसे नारियों का जीवन चरित्र प्रकाशित कर भारतीय स्त्री के सामने आदर्श नारी का रूप प्रस्तुत करके भारतीय स्त्री की धार्मिक चेतना को जगाने का प्रयास किया।

भारतीय नारी की महत्ता को प्रस्तुत करते हुए कहा गया।

या नारी प्रयता दक्ष या नारी पुत्रिणी भवेत्।
पतिव्रता पतिप्राणा सा नारी धर्मभागिनी।।''

जो नारी सब कार्यों में प्रयत्नशील है जो नारी सब कार्यों में दक्ष है जो नारी पुत्र-प्रसविनी है जो नारी पतिव्रता है, जो अपने पति के प्राण से ज्यादा प्यार करने वाली है वह नारी धर्म भागिनी है। कल्याण पत्रिका द्वारा नारी महता का आदर्श प्रस्तुत किया गया। आर्य शास्त्रों में भगवान को माता-पिता-बंधु-बाध्व कहा गया। वही नारी के तीन रूपों कि विशेष रूप से चर्चा किया गया तथा उनके रक्षा का दायित्व पुरूषों के उपर विशेष रूप से सौंपा गया।

पिता रक्षति कैमारे, भर्ता रक्षति यौवने।
रक्षान्ति स्थाविरे पुत्रा न स्त्री स्वातन्त्रयमहिति।।

The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities
Year-8 Volume: I, Jan-March, 2026 Impact Factor 5.625 (IIFS)
Issue-29 ISSN: 2582-1296 (Online)
Website: www.theasianthinker.com Email: asianthinkerjournal@gmail.com

बाल्यावस्था में पिता, युवा अवस्था में पति एवं वृद्धा अवस्था में पुत्र को हर प्रकार से स्त्री की रक्षा उसके मान सम्मान एवं उनके मर्यादा की रक्षा का भार सदैव पुरुष समाज का धर्म एवं कर्तव्य रहा है।

धर्म के मार्ग पर जब एक स्त्री पतिव्रत्य का पालन करते हुए चली है तो वह सती सावित्री बन जाती है। लोक घर से बाहर जाकर तपस्या करते है परंतु स्त्री घर में रहकर सभी कर्तव्यों का पालन करते हुए उग्र साधना करती है। उसके साधना से त्रिदेव भी डर जाते हैं। ऐसे महान पतिव्रता स्त्रियों की जन्म भूमि, तपोभूमि एवं कर्मभूमि रही है भारत। जिसने अपने तपोबल से यमराज को पिछे हटने पर मजबूर कर दिया एवं यमराज के यमपाश से अपने पति के प्राण वापस ले लिए।

सामाजिक चेतना: भारतीय सभ्यता की आधारशिला, संस्कृति और सदाचार पर आधारित रही है जिसमें ''वसुधैव कुटुम्बकम्' की भावना प्रबल रूप से दिखाई पड़ती है। भारतीय संस्कृति ने जहाँ पूरे विश्व को अपना कुटुम्ब समझा, मानव होने के नाते बगैर किसी भेदभाव, राष्ट्र, धर्म, नस्ल की प्रवाह किये सभी को एक परिवार के रूप में देखा। जहाँ ''बहुजन सुखाय बहुजन हिताय च' जैसी दार्शनिक अवधारणा कण-कण में रची बसी हो। ऐसे सामाजिक दायित्व से प्रेरित होकर 'कल्याण' पत्रिका के नारी अंक, नारी के प्रति लोगों को जागरूक करने का काम कर रही है।

एक तरफ पश्चिमी सभ्यता का सीधा प्रभाव हमारी संस्कृति पर पड़ रहा है। वही कल्याण पत्रिका द्वारा नारी के कर्तव्य, नारी के अधिकार, उनकी समस्याओं एवं उनके उत्थान को लेकर लगातार संघर्ष कर रही है। हमारे ससझ जिस प्राचीन वैदिक वैवाहिक कल्याण सूर्या के रूप में ऋग्वेद ने प्रस्तुत की वह परंपरा आज भी कई शताब्दि बीत जाने के बाद भी जीवित है।'' भारत की आदर्श परंपरा बहुत महान रही है एक ओर अहल्या के पतन तो दूसरी ओर उद्धार का रूप मिलता है। एक तरफ भाई लिए राजपाठ छोड़कर लक्ष्मण का राम के साथ वन जाना, भाई प्रति प्रेम सम्मान त्याग का प्रतिमा प्रस्तुत करती है वही दूसरी तरफ राजपाट के लोभ में रावण को छोड़ कर विभिषण का राम की शरण में जाना, लोभ कपट को दर्शाता है। वेश्या कही जाने वाली वसन्त सेना, बौद्ध अनुयायी होकर वासवदता हो मोक्ष के मार्ग पर चलती तो दूसरी तरफ सती अनसूया पति व्रत धर्म का पालन करते हुए त्रिदेव को बाल बनाकर स्तन पान कराती है। 'कल्याण' पत्रिका द्वारा नारी शक्ति को बढ़ाने, सामाजिक भेदभाव, को मिटाने को लेकर अवाज बुलंद करती दिखाई पड़ रही है। वही स्त्री के सामाजिक धार्मिक एवं सांस्कृतिक चेतना पर हो रहे कुठाराघात को रोकने, एवं भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति को पुनःस्थापित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है।

निष्कर्ष :

'कल्याण' पत्रिका के नारी अंक का यह अध्ययन बताता है कि भारतीय स्त्री चेतना को जगाने में धार्मिक ग्रंथों की महत्वपूर्ण

भूमिका रही है। 19वीं शताब्दी के समाजसुधारकों ने स्त्री की स्थिति पर ध्यान दिलाया, लेकिन 'कल्याण' ने वेद-उपनिषदों के माध्यम से यह दिखाया कि स्त्री का सम्मान भारतीय संस्कृति में पहले से मौजूद था।

इस अंक में प्रकाशित 'नारी और धर्म', 'नारी तीर्थ', 'नारी महत्ता' जैसे लेखों ने स्त्री को सिर्फ एक गृहिणी नहीं, बल्कि सांस्कृतिक मूल्यों की संवाहिका और आध्यात्मिक शक्ति के रूप में प्रस्तुत किया। इन लेखों ने स्त्री के आत्मसम्मान, अस्तित्व और उसकी वेदना को भी उजागर किया। शोध में पाश्चात्य नारीवाद और भारतीय दृष्टिकोण की तुलना से पता चलता है कि जहाँ पश्चिम में स्त्री को 'अन्य' माना गया, वहीं 'कल्याण' ने उसे स्वतंत्र और सशक्त इकाई के रूप में देखा। महात्मा गांधी के विचारों और 'भारत माता', 'धरती माता' जैसी अवधारणाओं ने भी स्त्री को शक्ति और सम्मान का प्रतीक बनाया। इस तरह 'कल्याण' के नारी अंक ने प्राचीन ग्रंथों के ज्ञान को आधुनिक संदर्भों से जोड़कर स्त्री चेतना के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया। यह अंक केवल लेखों का संग्रह नहीं, बल्कि भारतीय नारी के सम्मान और पहचान का एक ऐतिहासिक दस्तावेज है।

संदर्भ-सूची

1. नारी विमर्श की भारतीय परंपरा, कृष्णादत पालीवाल, पृ. 123
2. नारी विमर्श की भारतीय परंपरा, कृष्णादत्त पालीवाल, पृ. 123
3. श्रृंखला की कड़िया, पृ. 123
4. महात्मा गांधी का दर्शन, डॉ. धीरेन्द्र मोहन दत्त, पृ. 105
5. भारत माता धरती माता, राम मनोहर लेहिया, पृ. 79
6. मनुस्मृति अध्याय-3, श्लोक 56
7. नारी अंक, पृ. 172
8. नारी अंक, पृ. 103
9. नारी अंक, पृ. 494
10. नारी अंक, पृ. 935
11. नारी अंक, पृ. 49
12. नारी अंक, पृ. 38
13. कल्याण, 312
14. कल्याण, 313

The Asian Thinker